IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत के स्वाधीनता संग्राम, समाज सुधार एवं सांस्कृतिक नवोत्थान में गायत्री परिवार के संस्थापक पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य का योगदान

प्रो0(डॉ0) चन्द्रप्रकाश सिंह, ''शोध पर्यवेक्षक'',
विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग,
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा।

सुशील कुमार
''शोधार्थी'' इतिहास विभाग,
भू0 ना0 मं0 विश्वविद्यालय, मधेपुरा।

सारांश –

स्वाधीनता पूर्व एवं स्वाधीनता के समय भारतीय संस्कृति की स्थिति अत्यन्त समुन्नत व बेहतर थी। उसकी जड़ें गहरी थी। सभी धर्मों के लोग मिलजुल कर प्रेम पूर्वक और मातृत्व भावना के साथ रहते थे। बाद में अंग्रेजों ने भारतीय संस्कृति के मूलभूत विचारों में वैचारिक रूप से दखल देना शुरु कर दिया था। लेकिन अंग्रेजों ने अपनी कूटनीति से हिन्दू, मुस्लिम एवं अन्य भारतीय धर्मों के लोगों को बताया कि संस्कृति और धर्म दोनों अलग–अलग है। इससे भारत में सांस्कृतिक समस्या एवं संकट उपस्थित हो गया था। इस बांटो और राज करो की नीति से हमारी स्वतंत्रता खंडित हुई। इसका कारण है कि हम अपनी संस्कृति को ठीक से न पहचान पाने, न समझ पाने और न अनुभव कर पाने की अयोग्यता से भर गए थे। पाश्चात्य संस्कृति के अन्धानुकरण ने हमारे आँखों पर पट्टी डाल रखी थी। जब भारत विभाजन नहीं हुआ था, तब अंग्रजों ने देखा कि जब तक भारतीय जनता को धार्मिक रूप से विभाजित नहीं किया जाएगा, तब तक भारत को खंडित करना असंभव है। वे जानते थे कि भारत में सांस्कृतिक जड़े बहुत गहरी है। इसलिए उन्होंने धर्म और संस्कृति दोनों को अलग–अलग रूप में पेश किया। अंग्रेजों द्वारा भारतीय संस्कृति की विकृत व्याख्या एवं कुटिल विचारों से प्रेरित सांस्कृतिक विभाजन की प्रतिक्रिया स्वरूप अनेक महान भारतीय बुद्धिजीवियों ने आगे आकर भारतीय संस्कृति की रक्षा एवं उत्थान के लिए अपने आप को प्रस्तुत किया। उन्होंने भारत के विभिन्न क्षेत्रों में कई सांस्कृतिक आन्दोलनों को स्थापित किया।

अलगाव, आतंक, अस्थिरता, अव्यवस्था, कुटिलता और चाटुकारिता से जर्जर मानव सभ्यता आज न केवल त्रस्त है; बल्कि भयग्रस्त हो सहमी खड़ी है। उसे ऐसा लगता है कि पतन और विनाश का यह चक्र कहीं समूची मानव जाति को अपना शिकार न बना ले। आज यन्त्रीकरण और औद्योगीकरण की प्रगति में छुपी अवगति साफ दिखाई देने लगी है। इन व्यथापूर्ण क्षणों में विचारशील व्यक्तियों की दृष्टि फिर से धर्म और दर्शन की ओर घूम रही है। इस सम्भावित आशा के साथ कि ये अपने सृजन कौशल से कुछ विशेष कर दिखायेंगे; किन्तु विडम्बना धर्म मूढ़ताओं से ग्रसित है। चित्र–विचित्र मान्यताओं, कुरीतियों, कुप्रथाओं की मेघमालाओं ने इस सूर्य को आच्छादित कर लिया है और दर्शन, व जीवन से नाता तोड़वा कर बुद्धि की भूल–भूलैया में फँसता जा रहा है। दर्शन जिसे आर्यावर्त के ऋषियों ने, सुकरात सदश मनीषियों ने जीवन की राह के रूप में सृजा था, वह लुप्त हो गया है। आवश्यकता इस बात की थी कि फिर से कोई ऋषि जागृत हो, मनीषी सक्रिय हो; जो विचारों के इतिहास में क्रांति का विगुल बजायें, धर्म का अच्छादन तोड़े, विज्ञान को सही दिशा दे और दर्शन को जीवन की राह के रूप में सँवारें।

इतिहास में कभी–कभी ऐसा भी घटित होता है कि अवतारी सत्ता(चेतना) एक साथ बहुआयामी रूपों में प्रकट होती है, जो लाखों–करोडों ही नहीं पूरी विश्व–वसुधा के उद्धार हेतु इस चेतनात्मक धरातल पर सबके मनों का नये सिरे से निमार्ण करने में लग जाती है। इसी कड़ी में महान **युगऋषि, तपोनिष्ठ पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी** का अवतरण, इस पावन धरती पर हुआ। इसे एक ऐसी सत्ता के रूप में देखा जा सकता है जो युगों–युगों में गुरू एवं अवतारी सत्ता दोनों ही रूपों में सबके सामने प्रकट हुई, अस्सी वर्ष का जीवन जीकर एक विराट् ज्योति प्रज्जवलित कर उस सूक्ष्म चेतना से एकाकार हो गई जो आज के युग परिवर्तन को सन्निकट लाने में प्रतिबद्ध है।

कूट शब्द – स्वाधीनता, समुन्नत, कूटनीति, अन्धानुकरण, कुरीतियों, कुप्रथाएं, विश्व–वसुधा, सभ्यता, युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ।

जीवन वृतान्त –

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जन्म आश्विन कृष्णपक्ष, त्रयोदशी, 20 सितम्बर 1911 ई0 को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के आँवलखेड़ा ग्राम में पं0 रूपकिशोर शर्मा और माता दानकुँवरी देवी के घर हुआ था। बाल्यकाल ग्रामीण परिसर में ही बीता, उनका जन्म तो एक जमींदार परिवार में हुआ था, किन्तु उनका अन्तःकरण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था। साधना के प्रति उनका झुकाव बचपन से ही दिखाई देने लगा था। अपने सहपाठियों को, छोटे–छोटे बच्चों को दरवाजा एवं बगीचों में बैठाकर स्कूली शिक्षा के साथ–साथ सुसंस्कारिता अपनाने वाली आत्मविद्या का शिक्षण दिया करते थे। उन्होंने जातिगढ़ मूढता भरी मान्यता से ग्रसित तत्कालीन भारत के ग्रामीण परिसर में एक अछूत (मेहतर) वृद्ध महिला जिसे कुष्ठ रोग हो गया था, उसी के टोले में जाकर सेवा कर उनसे अपने घरवालों का विरोध मोल ले लिया, पर अपना व्रत नहीं छोड़ा।

किशोर अवस्था में ही समाज सुधार की रचनात्मक प्रवृत्तियां उनमें दिखने लगा था। हाट–बाजारों में जाकर स्वास्थ्य–शिक्षा प्रधान पत्र बाँटना, पशु धन को कैसे सुरक्षित रखा जाय, स्वाबलम्बी कैसे बने, इसके लिए छोटे–छोटे पर्चा कैसे लिखें, हाथ की प्रेस से छपवाने के लिए उन्हें किसी शिक्षा की आवश्यकता नहीं थी। वे चाहते थे कि जनमानस आत्मनिर्भर बने, राष्ट्र के प्रति स्वाभिमान उनका जागे, इसलिए नारी शक्ति व बेरोजगार युवाओं के लिए गाँव में ही एक बुनताघर स्थापित कर हाथ से कपड़े बुनना तथा अपने पैरो पर कैसे खडा हुआ जाय, उन्होनें सिखाया।

15 वर्ष की आयु में वसंत पंचमी की वेला में **सन् 1926** में उनके घर की पूजा स्थली में, जो उनकी नियमित उपासना का तब से आगार थी, जब **महामना पं0 मदन मोहन मालवीय** जी ने उन्हें काशी में **गायत्री महामंत्र** की दीक्षा दी थी, **उनकी गुरूसत्ता का आगमन हुआ अदृश्य छायाधारी सूक्ष्म रूप में।** ये सूक्ष्मसत्ता ने उनको विगत कई जन्मों का दिग्दर्शन कराया और बताया कि वे हिमालय से आये हैं और उनसे अनेकानेक क्रियाकलाप कराना चाहते हैं, जो अवतारी स्तर के ऋषि सत्ता उनसे अपेक्षा रखती है।

आचार्यश्री का भारतीय स्वतंत्रता में योगदान–

आचार्यश्री को राष्ट्र के परालम्बी होने की पीड़ा उतनी ही सताती थी, जितनी की गुरूसत्ता के आदेशानुसार तपकर सिद्धियों के उपार्जन की ललक उनके मन में थी। सन् 1927 से 1933 तक का समय उनका एक सक्रिय स्वयं सेवक–स्वतंत्रता सेनानी के रूप में बीता, जिसमें घरवालों के विरोध के बाबजूद पैदल लम्बा रास्ता पारकर वे आगरा के उस शिविर में जा पहुँचे, जहाँ शिक्षण दिया जा रहा था, अनेकानेक मित्रों–मार्गदर्शकों के साथ भूमिगत होकर कार्य करते रहे तथा समय आने पर जेल भी गये। 6–6 माह की उन्हें कई बार जेल यातानाएं सहनी पड़ी। जेल में भी वो निरक्षर साथियों को शिक्षण देकर स्वयं अंग्रेजी सीखकर लौटें। **आसन–सोल जेल** में वे पं0 जवाहरलाल नेहरू की माता श्रीमती स्वरूपरानी नेहरू, श्री रफी अहमद किदवई, महामना मालवीय जी, देवदास गाँधी जैसी हस्तियों के साथ रहे व वहाँ से एक मूलमंत्र सीखा जो मालवीय जी ने दिया था कि जन–जन की साझेदारी बढाने के लिए हर व्यक्ति के अंशदान से मुट्ठी फण्ड से रचनात्मक प्रवृत्तियाँ चलाना। यही मंत्र आगे चलकर एक घण्टा समयदान बीस पैसा नित्य या एक दिन की आय एक माह में तथा एक मुट्ठी अन्न रोज डालने के माध्यम से धर्मघट की स्थापना का स्वरूप लेकर आज लाखों–करोड़ों वाला गायत्री परिवार बनता चला गया, जिसका आधार था प्रत्येक व्यक्ति की यज्ञीय भावना का उसमें समावेश।

आचार्यश्री नमक आन्दोलन के दौरान औपनिवेशिक शासकों के समक्ष झुके नहीं, सैनिकों द्वारा उन्हें मार पड़ती रही, परन्तु समाधि स्थिति को प्राप्त राष्ट्र देवता के पुजारी को बेहोश होना स्वीकृत था, पर आन्दोलन से पीठ दिखाकर भागना नहीं। पर आन्दोलन के दौरान उन्होंने झण्डा छोड़ा नहीं जबकि अंग्रेज पुलिस उन्हें पीटते–पीटते पुरा लहूलहान कर दिया, झण्डा छीनने का पूरा प्रयास किया, पर वे सफल नहीं हो पाये। वो मुँह से झण्डा पकड़ कर बेहोश गिर पडे, बाद में जब चिकित्सकों के द्वारा दाँतों के नीचे से झण्डा का टुकड़ा निकाला गया तब सब उनकी सहन"ाक्ति देखकर आश्चर्य चकित रह गये। तब से ही उन्हें आजादी के मतवाले उन्मत **श्रीराम मत्त** नाम मिला। लगानबन्दी आंकड़ों को एकत्र करने के लिए उन्होनें पूरे आगरा का दौरा किया व प्रस्तुत आंकड़ों को तत्कालीन संयुक्त प्रान्त के मुख्यमंत्री श्री गोविन्द वल्लभ पंत द्वारा गाँधी जी के समक्ष पेश किया गया। बापू जी अपने प्रशस्ति के साथ प्रमाणिक आंकड़ों को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट भेजे और इसी आधार पर पूरे संयुक्त प्रांत के लगान माफी का आदेश प्रसारित हुआ। राजनीति में प्रवेश के बाद आचार्यश्री महात्मा गाँधी के अत्यन्त निकट आ गये थे। 1942 से पूर्व 8–10 वर्षों तक प्रतिवर्ष 2 मास सेवाग्राम में गाँधीजी के पास रहा करते थे। आचार्य कृपलानी, श्री पुरूषोत्तमदास टंडन, पं0

गोविन्दवल्लभ पंत, डॉ0 कैलासनाथ काटजू से घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आचार्यश्री तत्कालीन संयुक्त प्रांत तथा मध्य प्रदेश के प्रभारी नेता बने। वो विचारों तथा कर्मों से क्रांतिकारी थे। 1942 के आगरा षड्यंत्र केस में उन्हें प्रमुख अभियुक्त बनाया गया और वे गिरफ्तार हुए। 1945 में रिहा होने के बाद जनमानस के विचारों में परिवर्तन करने की ओर अपना ध्यान आकृष्ट किया। जिन्होंने स्वतंत्रतारूपी कुण्ड में अपने आप को आहुति के रूप में समर्पित कर दिया, उन्हें सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर पचास वर्ष बाद ताम्रपत्र देकर शांतिकुंज में सम्मानित किया। सम्मान व स्वाभिमान के साथ सारी सुविधाएँ व पेंशन उन्होंने प्रधानमंत्री राहत फण्ड, हरिजन फण्ड के नाम समर्पित कर डाला। वैरागी जीवन का, सच्चे राष्ट्र संत होने का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता?

आचार्यश्री द्वारा किये गये कार्यों का संक्षिप्त परिचय–

- सन् 1935 में श्री अरविन्द से पाण्डिचेरी में, रविन्द्रनाथ टैगोर से शांतिनिकेतन में एवं बापू से साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में मुलाकात की तथा सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को परतंत्रता की बेड़ियों से कैसे मुक्त किया जाय, यह निर्देश लेकर अपना आध्यात्मिक अनुष्ठान यथावत् चलाते हुए पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश कर **सैनिक** समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में अपना योगदान दिये।
- सन् 1938 में वसंत पंचमी के दिन **अखण्ड ज्योति** मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया। जो **1940 में अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा** से अनवरत देश ही नहीं विदेशों में भी कई भाषाओं में पहुँच रही है।
- अपने **जन्मभूमि आँवलखेड़ा, आगरा** में अपनी माता के नाम पर श्री दानकुँवरी इंटर कॉलेज, गायत्री शक्तिपीठ, स्वावलंबन केन्द्र, बालिका उच्चतर माध्यमिक एवं महाविद्यालय तथा माता भगवती सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापना की, साथ ही एक बड़ी गाशाला तथा यज्ञशाला भी स्थापित किया। यहां एक भव्य सूर्य मंदिर एवं ध्यान केन्द्र का निर्माण कराया गया।
- **युगतीर्थ गायत्री तपोभूमि मथुरा** में सन् **1953 में 108 कुण्डीय महायज्ञ**, सन् **1956 में नरमेध यज्ञ और सन् 1958 में विराट् सहस्र कुण्डीय यज्ञ** सम्पन्न कर **युग निर्माण योजना** का सूत्रपात किया गया। यहां युग निर्माण स्वावलंबन विद्यालय सन् 1967 से सफलता पूर्वक चलता आ रहा है। इस परिसर में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य पारमार्थिक चिकित्सालय भी है।
- सन् **1971** में सप्तऋषियों की तपस्थली उत्तराखंड के हरिद्वार नगर में **शांतिकुंज** की स्थापना की गई, जिसे आज गायत्री परिवार के **मुख्यालय/केन्द्र** के रूप में जाना जाता है, जो आज करोड़ों लोगों की आस्था का केन्द्र है। आचार्य श्री द्वारा **1926 से प्रज्ज्वलित अखण्ड दीप** की स्थापना की गई, जो आज भी प्रज्ज्वलित है। यहां नित्य नियमित हजारों की संख्या में साधक यज्ञ सम्पन्न करते हैं। आज यहां शरीर, मन व अन्तःकरण को स्वस्थ समुन्नत बनाने का व्यावहारिक मार्गद"ान दिया जाता है। यहां **9 दिवसीय संजीवनी साधना सत्र, 1 मासीय युगशिल्पी सत्र** के साथ कई सत्र निरंतर चलता रहता है। यहां के **जड़ी बूटी उद्यान में 300** से अधिक दुर्लभ औषधियां भी लगाई गयी है।
- **ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार** की स्थापना वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला के रूप में सन् 1979 में किया गया। आधुनिक कम्प्यूटराइज्ड उपकरणों से सुसज्जित इस प्रयोगशाला में मुख्य रूप से तीन प्रकार का शोध किया जाता है–
    - यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला,
    - आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा शरीर, प्राण और मन अर्थात समग्र जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों को मापने करने वाली प्रयोगशाला।
    - वनौषधि अनुसंधानशाला और दुर्लभ जड़ी–बूटी का वनौषधि उद्यान।
- प्राचीन गुरूकुल परंपरा पर आधारित भारतीय संस्कृति के अनुसार मानव गढ़ने हेतु **देवसंस्कृति विश्वविद्यालय, युगतीर्थ गायत्रीतीर्थ हरिद्वार** में स्थापित किया गया। जिसका उद्देश्य देव संस्कृति का शिक्षण एवं प्रसार करना। यह विश्वविद्यालय युवाओं को स्वावलंबन एवं रोजगार के अनेक अवसर जुटा रहा है। जो देश व संस्कृति के उत्थान एवं विश्व मानवता के कल्याण में श्रेष्ठतम नागरिक, समर्पित स्वयंसेवक, प्रखर राष्ट्रभक्त एवं विशेषज्ञ बनाने का उद्देश्य पूरा कर रहा है। यहां आधुनिक लाइब्रेरी, प्रज्ञेश्वर महाकाल का भव्य मंदिर और एक बड़ी गाशाला भी है, साथ ही विभिन्न विषयों के परास्नातक कोर्स के साथ–साथ 6 माह, 1 वर्ष तथा 3 वर्ष के डिप्लोमा कोर्स भी चलाये जाते हैं।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सेनानी** : इन्होंने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी **''श्रीराम मत्त''** के रुप में प्रख्यात हुए।

- ❖ **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : चारों वेद, 108 उपनिषद, षड्दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की। तथा ही 3000 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया।
- ❖ **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की। लुप्त प्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन–जन को अवगत कराया।
- ❖ **समाज सुधारक** : नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति–पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया।
- ❖ **गायत्री के सिद्ध साधक** : गायत्री और यज्ञ को रुढ़ियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन–जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया।
- ❖ **वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के प्रणेता** : धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला **'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान'** स्थापित कर सिद्ध किया कि **''धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, बल्कि पूरक है''**।
- ❖ **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मीयता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी युग निर्माण परिवार **'गायत्री परिवार'** का गठन किया।

इस परिवार का उद्देश्य ''मनुष्य में देवत्व का उदय एवं धरती पर स्वर्ग का अवतरण'' है। विचारों के द्वारा परिवर्तन कराकर सभ्य समाज एवं सुसंस्कारित मानव तैयार करना है। इसके लिए इन परिवारों के द्वारा इन सात आन्दोलनों पर जोर दिया गया है–**1. साधना 2. स्वास्थ्य, 3. शिक्षा, 4. स्वावलंबन, 5. पर्यावरण, 6. नारी जागरण 7. व्यसनमुक्ति, कुरीति उन्मूलन।**

01. साधना – साधना ही युग निर्माण मिशन का मूल प्राण है। इसी आधार पर गायत्री परिवार खड़ा है। जीवन साधना से जोड़कर स्वाध्याय, संयम, सेवा में लगाना, मंत्र–जप, मंत्र–लेखन, संस्कार, देवस्थापना, यज्ञ, धार्मिक आयोजन, आरोपण करना प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है, एवं आचार्यश्री द्वारा कराई गई विभिन्न ध्यान साधनाओ में से किसी एक को गहराई में उतारना है।

02. शिक्षा – इसे ऐसे आन्दोलन के रूप में गति दिया जा रहा है, जिसमें न केवल समूचा राष्ट्र साक्षर हो सके, बल्कि सुसंस्कारित व आत्मावलम्बी बनाया जा रहा है। शिक्षा का प्रसार, पुस्तकालय, वाचनालय, प्रौढ़ शिक्षा, रात्रि पाठशालाएँ, शिक्षा विद्या के साथ जुड़े, विद्यालयों में विचार क्रांति Personality Development Class के माध्यम से, बाल संस्कार शालाएँ झुग्गी–झोपड़ी, असहाय एवं गरीब बच्चों के बीच चलाया जाता है, जिससे उनके जीवन का सर्वांगीण विकास हो, इसके लिए महत्वपूर्ण सूत्र भी प्रदान किया जाता है। कामकाजी विद्यालय योजना, युग साहित्य के स्वाध्याय, ज्ञान आचरण में कितना उतरा, उसका समय समय पर मूल्यांकन, भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार हेतु विद्यालय एवं महाविद्यालयों में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का आयोजन कराया जाता है।

03. स्वास्थ्य – रूग्णता रोकने के उपाय जीवन शैली में परिवर्तन कर विकसित करना इस आन्दोलन का उद्देश्य है। आहार–विहार, चिंतन, चरित्र, श्रम, विश्राम का संतुलन, योग, व्यायाम, प्राणायाम आदि को दिनचर्या में समाहित करना, संयम वरतना, जड़ी–बूटी चिकित्सा अपनाने पर जोर दिया जाता है। विशेषरूप इस कार्य हेतु देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के बच्चो को पूरे देश में इंटर्नशिप हेतु भेजा जाता है। इन बच्चों के द्वारा योग, आसन, ध्यान के साथ–साथ सात्विक जीवन चर्या कैसे बने, इसके लिए आचार्यश्री द्वारा दिये गये सूत्रों को बताया जाता है।

04. स्वावलंबन – हमारे कृषि प्रधान देश में आर्थिक क्रांति ग्राम को केन्द्रित करके बनाई योजना के द्वारा आयेगी। स्वाबलंबन की मनोवृत्ति, श्रम का सम्मान, स्वयं सहायता बचत समूह, कूटीर उद्योग, ग्रामोद्योग, गौपालन, कमजोर वर्ग का शोषण न हो, इन सबों का समय समय पर शिक्षण–प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

05. पर्यावरण – हरीतिमा संबंर्द्धन और कचरे की व्यवस्था करना। प्रकृति में यज्ञीय चक्र (Ecological Balance) के प्रति आस्था, अनगढ़ सुख–व्यसन के लिए प्रकृति को नुकसान न पहुँचाना, कचरे का निस्तारण, दैवीय आपदाएँ, बाढ़, भूकम्प को कम करने लिए वृक्ष लगाना, यज्ञ द्वारा प्रदूषण को कम करना, शिक्षको, छात्रों को प्रशिक्षण देना, श्रीराम स्मृति उपवन की स्थापना करना, इत्यादि के लिए सामाजिक जागरूकता, प्रशिक्षण एवं व्यवस्था तंत्र विकसित किया जा रहा है।

06. महिला जागरण – महिलाओं मे आत्म गौरव का जागरण उनको परिपूर्ण शिक्षण देना, योग्यता का विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, सुरक्षा और सुसंस्कार, आत्म गौरव का बोध, आत्मविश्वास, सोने की जंजीरों से मुक्ति, बेटे–बेटी में समानता। बेटी–बहू का अन्तर मिटाना, नारी की नारी के प्रति संवेदना जगाना।

जगह–जगह सार्थक आयोजन करना, जिसकी पूरी व्यवस्था महिलाऐं संभाले, इसके लिए क्षेत्रों में नारी जागरण प्रशिक्षण दिया जाता है।

07. **व्यसन मुक्ति–कुरीति उन्मूलन** – तंबाकू, शराब, पान मसाला, गुटखा, मादक औषधियों का प्रचलन रोकना। **''व्यसन से बचाएँ–सृजन में लगाए''**। त्याज्य परंपराएं क्यों पनप रही है, इसपर विचार करना। उपजाति का भेद मिटाना, मृतक भोज का प्रचलन बंद करना। दहेज, फजूलखर्ची जैसी कुरीतियां बंद करना। महिलाओं–बच्चों को प्रेरित करना एवं विद्यालयों, विभिन्न सामाजिक संगठनों, संप्रदायों को प्रेरित कर सक्रिय करने का काम किया जा रहा है।

निष्कर्ष –

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श के सिद्धान्त के आधार पर परिवार, समाज, राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैव कुटुम्बकम** की मान्यता के आदर्श के अनुकरण करते हुए हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है **गायत्री परिवार।**

एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि **पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य** द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आन्दोलन के रूप में उभर कर विश्व पटल पर छा रहा है। उन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर **24–24 लाख के 24 महापुरश्चरण 24 वर्षों** में सम्पन्न किया। प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया। **विचार क्रान्ति अभियान** के द्वारा विचारों को परिष्कृत और ऊँचा उठाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की। मनुष्य को देवता समान, घर–परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने में समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया। उन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी। उन्होंने 21वीं सदी उज्जवल भविष्य का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया। उन्होंने **''धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण''** की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े, जिससे मानवता और विश्व कल्याण का मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

संदर्भ सूची –

01. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– अखण्ड ज्योति पत्रिका : अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, , 1942
02. विपिन चन्द्र– आधुनिक भारत का इतिहास : ऑरिएन्टल ब्लैकस्वान, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली 2008
03. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान : अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, 1995
04. डॉ0 अरूण कुमार जायसवाल– वैदिक संस्कृति के विविध आयाम : ललित प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000
05. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– अखण्ड ज्योति पत्रिका : अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1947
06. डॉ0 मंदाकिनी श्रीमाली– प्रज्ञा पुरुष का समग्र दर्शन : अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, 2002
07. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व : अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, 1995
08. दिनकर, रामधारी सिंह– संस्कृति के चार अध्याय : साहित्य अकादमी, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1956
09. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– विश्व वसुधा जिनकी सदा ऋणी रहेगी : अखण्ड ज्योति संस्थान मथुरा, 1996
10. ए0 आर0 देसाई– भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि : भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, 1976
11. पं0 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला(अनुवादक)– भारत का भविष्य : स्वामी विवेकानन्द, रामकृष्ण मठ, नागपुर, 1988
12. सामाजिक लेख संकलन– हिन्दुत्व : एक जीवन पद्धति : सुरूची प्रकाशन नई दिल्ली, 2016
13. स्वामी निर्वेदानन्द (संकलन)– भारत और उसकी समस्या : स्वामी विवेकानन्द : रामकृष्ण मठ, नागपुर, 2016
14. श्री कृष्ण भट्ट– वैदिक धर्म क्या कहता है : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 2010
15. डॉ0 शरद हेबालकर– भारतीय संस्कृति का विश्व प्रचार : सुरूची प्रकाशन नई दिल्ली, 2014
16. एक नाथ रानाडे– हे हिन्दू राष्ट्र ! उत्तिष्ठत जाग्रत : सुरूची प्रकाशन नई दिल्ली, 2013
17. विपिन चन्द– भारत का स्वतंत्रता संघर्ष : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1998

18. विपिन चन्द– आजादी के बाद भारत(1947–2000) : हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2002
19. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य– हमारी वसियत और विरासत : युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा, 2010
20. हितेष शंकर– पांचजन्य : भारत प्रकाशन दिल्ली, 1948
21. अयोध्या सिंह– भारत का मुक्ति संग्राम : प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, 1994
22. आर0 सी0 मजुमदार, राय चौधरी, कालीकिंकर दत्त– भारत का वृहत इतिहास–भाग 3 : मैकमिलन इंडिया लिमिटेड, दिल्ली, 1989
23. गौतम पी0 एल0– आधुनिक भारत(1757–1964) : राजस्थान हिन्दी ग्रथ अकादमी जयपुर, 2004
24. वी0 पी0 वर्मा– आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन : आगरा, 1998
25. आर0 सी0 मजुमदार– भारतीय जनता का इतिहास और संस्कृति श्रेण्य युग : मोतीलाल वनारसी दास, दिल्ली, 1984